ISSN 2250-2769

इतिहास दिवाकर

Itihās Diwākar

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

(PEER REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

वर्ष १४ अंक ३-४ आश्विन-पौष मास कलियुगाब्द ५१२३ अक्तूबर २०२१-जनवरी २०२२

इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

मार्गदर्शक मण्डल

डॉ. शिवाजी सिंह	गोरखपुर, (उ.प्र.)	+91–96288–72796	jns.sbs@gmail.com
श्री विजय मोहन कुमार पुरी	कांगड़ा (हि.प्र.)	+91–98163–20307	vmkpuri@outlook.com
प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री	कांगड़ा (हि.प्र.)	+91–94181–77778	kuldeepagnihotry@gmail.com
डॉ. ईश्वर शरण विश्वकर्मा	प्रयागराज, (उ.प्र.)	+91–99354–00244	isvishwarkarma@gmail.com
प्रो. कुमार रत्नम	नई दिल्ली	+91–88396–79817	kumarratnam65@gmail.com
डॉ. सुदर्शन गुप्ता	कठुआ, जम्मू	+91–79735–61624	vnclsg@gmail.com
डॉ. रमेश चन्द शर्मा	हमीरपुर (हि.प्र.)	+91–94184–80231	dr.rcsharma7@gmail.com
श्री चेतराम गर्ग	नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)	+91–94184–85415	chetramneri@gmail.com

विषय विशेषज्ञ एवं परीक्षण मण्डल

प्रो. सुगम आनन्द	आगरा (उ.प्र.)	+91–93191–05821	sugam@yahoo.co.in
प्रो. ओम प्रकाश शर्मा	शिमला (हि.प्र.)	+91–94184–80231	sharmaom70@gmail.com
प्रो. भाग चन्द चौहान	कांगड़ा (हि.प्र.)	+91–92191–41813	bcawake@gmail.com
डॉ. धर्म चन्द चौबे	अलवर, राजस्थान	+91–94611–94995	choubeydc.87@gmail.com
डॉ. नीत बिहारी लाल	रामपुर, (उ.प्र.)	+91–98376–56583	neetbehari@gmail.com
डॉ. कंवर चन्द्रदीप	कांगड़ा (हि.प्र.)	+91–95318–04179	kanwar.chanderdeep@gmail.com
डॉ. अंकुश भारद्वाज	शिमला (हि.प्र.)	+91–98760–35002	ankushbhardwaj333@gmail.com
डॉ. प्रियतोश शर्मा	चण्डीगढ़	+91–95015–36200	priyatosh.32@gmail.com

सम्पादन सहयोग

डॉ. ओम दत्त सरोच	ऊना, (हि.प्र.)	+91–94180–42431	omduttsaroch29@gmail.co
डॉ. शिव भारद्वाज	सोलन (हि.प्र.)	+91–94188–28866	shivmrkv29@gmail.com
डॉ. कृष्ण मोहन पाण्डेय	ऊना (हि.प्र.)	+91–97639–77002	apkmpandey@gmail.co
डॉ. मनोज कुमार	हिसार, हरियाणा	+91–94160–85062	rangra.manoj@rediffmail.c
डॉ. जयप्रकाश सिंह	कांगड़ा (हि.प्र.)	+91–98826–01975	jpsh.pol@gmail.com

सम्पादकीय कार्यालय

इतिहास दिवाकर

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,

गांव व डाकघर नेरी, जिला हमीरपुर - 177001 (हि.प्र.)

ISSN 2250-2769

इतिहास दिवाकर

पीयर रिव्यूड मूल्यांकित अनुसंधान पत्रिका

वर्ष १४ अंक ३-४ आश्विन-पौष मास कलियुगाब्द ५१२३ अक्तूबर २०२१-जनवरी २०२२

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

उद्‌बोधन

- इतिहास से प्रेरणा लें — श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, माननीय राज्यपाल, हि.प्र. — ५
- भारतीय इतिहास की दिशा — प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री — ६

संवीक्षण

- भारतीय सशस्त्र सैनिकों का स्वतन्त्रता में योगदान (१७५७-१८५६) — लकी शर्मा — १६
- जलियांवाला बाग नरसंहार : जनरल डायर एवं हंटर कमेटी — डॉ.प्रशान्त गौरव, डॉ.रमेश चन्द — २४
- स्वाधीनता आन्दोलन में हिमाचल की राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाएं — डॉ. शिव भारद्वाज — ३३
- राजस्थान का अप्रतिम सेनानी भूपसिंह — डॉ. धर्मचन्द चौबे — ४५
- स्वराज संघर्ष में झांसी जिले का योगदान (१६०७-१६४७) — डॉ. चित्रगुप्त — ५४
- क्रान्ति का गुमनाम सिपाही : पण्डित जयराम 'पेंटर' — डॉ. चेतराम गर्ग — ६२
- बेगार प्रथा के उन्मूलक : कुन्दामल — डॉ. राकेश कुमार शर्मा — ६७

वैदिक गणित

- Vinculum Method in Vedic Mathematics — Gopal Dass Sharma — ७४

गांव का इतिहास

- गौना गांव का इतिहास एवं संस्कृति — आचार्य रत्नचन्द 'रत्नाकर' — ८१

पुस्तक समीक्षा

- प्रखर राष्ट्रभक्त एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय — दामोदर गौतम — ८६
- स्वराज संघर्ष में हिमाचल के नेपथ्य नायक (भाग-१) — सन्नी कुमार — ६१

ध्येय पथ

- गतिविधियां — ऋषि भारद्वाज — ६३
- सम्पादक के नाम पत्र — १०२

ISSN 2250-2769, वर्ष १४, अंक ३-४, आश्विन-पौष मास,
कलियुगाब्द ५१२३, अक्तूबर २०२१-जनवरी २०२२

पुस्तक समीक्षा

दामोदर गौतम

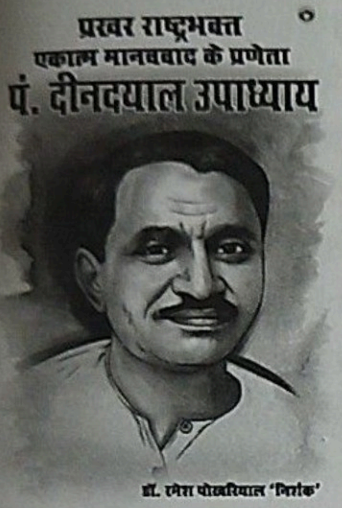

प्रखर राष्ट्रभक्त एकात्म मानववाद के प्रणेता
पं. दीनदयाल उपाध्याय
लेखक : डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
प्रकाशक : डायमण्ड बुक्स, दिल्ली
प्रथम संस्करण : २०१६
पृ. : २४७, मूल्य : २५०/-

प्रसिद्ध शिक्षाविद्, राजनीतिज्ञ एवं पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा लिखी पुस्तक पं. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रचिन्तन का प्रतिबिम्ब है। पुस्तक न केवल पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान व्यक्तित्व के सामाजिक दर्शन को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है बल्कि उस महान देशभक्त, कुशल संगठनकर्त्ता, प्रखर विचारक, दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ और प्रबुद्ध साहित्यकार के दर्शन से जुड़ी अनेकों ऐसी जानकारियां भी देती है जो अभी तक अल्पज्ञात थी। पुस्तक उस महान व्यक्तित्व के लिए समर्पित है जिसकी आकस्मिक मृत्यु होने पर तमाम राजनीतिक मतभेद होने के बाद भी तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को भी उनके बारे में यह कहना पड़ा कि 'श्री उपाध्याय देश के राजनीतिक जीवन में प्रमुख भूमिका अदा कर रहे थे। मुझे श्री उपाध्याय की मृत्यु की खबर सुनकर गहरा आघात पहुंचा है। उनकी ऐसी दुखद परिस्थितियों में असमायिक और अप्रत्याशित मृत्यु से उनका कार्य अधूरा रहा गया है।

लेखक द्वारा पुस्तक में पं. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रचिन्तन से सम्बन्धित दर्शन को मुख्यतः ३६ प्रमुख शीर्षकों में विभाजित किया गया है। पुस्तक में पं. दीनदयाल उपाध्याय के जन्म, बचपन में ही माता-पिता का देहावसान और मामा द्वारा लालन-पोषण, शिक्षा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में एक सामान्य कार्यकर्त्ता से लेकर उनके जनसंघ अध्यक्ष पद तक के सफर और वैचारिक यात्रा को अनेक जीवन्त दृष्टान्तों एवं प्रसंगों के साथ प्रस्तुत किया गया है। स्वतन्त्र भारत की दशा और दिशा क्या होनी चाहिए इसके बारे में पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा १९६५ में मुम्बई में दिए गए भाषण का उल्लेख पुस्तक में गहनता और सूक्ष्मता से किया गया है। 'भारत को भारत की ही दृष्टि से ही आगे बढ़ना पड़ेगा।' पश्चिमी विचारधारा कभी भी भारत को सही दिशा नहीं दे सकती। चाणक्य की तरह दीनदयाल उपाध्याय राज्य और राष्ट्र को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। जब तक हम अपनी राष्ट्रीय पहचान के सम्बन्ध में जागरूक नहीं होंगे। तब तक हम अपनी भविष्य की सभी संभावनाओं को विकास नहीं कर सकेंगे। लेखक द्वारा पुस्तक में पं. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक चिन्तन की विस्तार से चर्चा की गई है। दीनदयाल उपाध्याय मानते थे कि 'दुनिया में भारत की सामाजिक संरचना सबसे जटिल है अतः जब तक किसी भी देश की सामाजिक सरंचना को ठीक से समझा नहीं जाता तब तक हम किसी भी प्रकार के

परिवर्तन नहीं कर सकते। प्रगति का आधार पश्चिम नहीं, हमें आधुनिकता और प्राचीन समाज के बीज सामंजस्य की बात करनी होगी। भारतीय समाज की प्रमुख खासियत है कि विभिन्न रूपों में विविधता के साथ एकता की अभिव्यक्ति। यदि इस सत्य को सर्वत्र रूप से स्वीकार कर लिया जाए तो विभिन्न सत्ताओं के बीच परस्पर विरोध का कोई कारण नहीं होना चाहिए। परस्पर संघर्ष संस्कृति का संकेत नहीं उसकी गिरावट का प्रतीक है। समाज व्यक्ति से ऊपर है कई बार व्यक्ति अपनी आलोचना को स्वीकार कर लेता है परन्तु अपने समाज की नहीं। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने सामाजिक मनोविज्ञान के अधिकतर सिद्धान्तों की व्याख्या भी अपने तरीके से की है। दीनदयाल के सामाजिक चिन्तन में मेकडुगल के ग्रुप माईंड सिद्धान्त का उदाहरण पुस्तक को और अधिक सारगर्भित बनाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार दीनदयाल भी स्वीकार करते हैं कि समाज के व्यक्ति का अलग अपना मस्तिष्क, अलग मनोविज्ञान, चिंतन प्रक्रिया और कार्य करने के तरीके होते हैं। लेखक के अनुसार मानव व समाज अर्थवादी, राजनीतिवादी, मतवादी तथा संस्कृतिवादी। अर्थवादी संपति को ही सर्वस्व समझता है और राजनीति का निर्धारण इसी आधार पर करना चाहता है। संस्कृति और मत को गौण समझता है। राजनीतिवादी वर्ग जीवन का सम्पूर्ण महत्त्व राजनीति प्रमुखता प्राप्त करने में ही समझाता है। मतवादी वर्ग मजहब परस्त या मतवादी होते हैं ये वर्ग अपने-अपने मजहब के सिद्धान्तों के अनुसार ही देश की राजनीति और अर्थनीति को चलाना चाहते हैं। संस्कृतिवादी वर्ग का विश्वास है कि भारत की आत्मा का स्वरूप प्रमुख्यतः संस्कृति ही है। अतः अपनी संस्कृति की रक्षा एवं विकास ही हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए। भारत के परम्परागत आधार के अनुसार भी ये प्रवृत्तियां प्राचीन काल में भी उपस्थित थी। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही ये चार प्रवृत्तियां हैं। धर्म संस्कृति का अर्थ नैतिक वैभव का, काम राजनीतिक आकांक्षाओं का तथा मोक्ष पारलौकिक उन्नति का द्योतक है। दीनदयाल उपाध्याय के प्रकृति से सम्बन्धित चिन्तन को भी पुस्तक में अत्यन्त सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। वे कहते हैं कि प्रकृति शक्तिशाली है इसके विरुद्ध जाने से समस्याएं उत्पन्न होगी। अतः संस्कृति के स्तर को प्राकृतिक संसाधनों के साथ उत्पन्न करें। भारतीय संस्कृति का आधार प्रकृति पूजन का ही रहा है इसलिए यहां गायें, अन्य पशु-पक्षी एवं वनस्पतियां पूजनीय रही। क्योंकि इनका एक विशेष वैज्ञानिक आधार है।

पुस्तक में लेखक द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय के जीवन से सम्बन्धी अनेकों ऐसे प्रसंग दिए गए हैं जिनसे उनका जनसामान्य के लिए दर्द, मातृभूमि के लिए प्रेम, उनके अहंकार का व्यक्तित्व पर हावी न होना, वर्ण व्यवस्था, भारत की भविष्य की अर्थव्यवस्था, राष्ट्रवादी विदेश नीति, गांव खेती और किसान के बारे उनके चिन्तन को पाठक सरलता, सूक्ष्मता और सारगर्भित तरीके समझ सकता है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन को किसी एक पुस्तक में समाहित किया जा सके। परन्तु लेखक ने अपने अथक एवं अन्वेषणीय प्रयासों से एक पुस्तक के माध्यम से जनसाधारण एवं समाज वैज्ञानिकों के लिए राष्ट्रीय एवं वैज्ञानिक चिन्तन के नए आयाम स्थापित करने की कोशिश की है। हालांकि ऐसे महान विचारकों का मूल्यांकन हमेशा अधूरा ही रहता है और इतिहास के घटनाक्रम में ही उनकी पूर्णता और प्रबलता स्थापित होती है।

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र
रा.महा. झंडूता, बिलासपुर (हि.प्र.)